10 मोहरम को क्या क्या हुआ

और

10 मोहर्रम की फजी़लत



संकलक

मुहम्मद एहसान रज़ा क़ादरी

अल्लाह के नाम से शुरु जो बहुत मेहरबान रहमत वला

10 मोहर्रम के रोज़े की फजी़लत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि जब हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। उनसे वजह पूछी तो उन्होंने कहा: इस दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इसराईल को फिरऔन पर ग़लबा दिया, हम इसकी तअज़ीम में रोज़ा रखते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: हम मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा क़रीब हैं, फिर आपने इस दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, सफ़ा 698, इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह)

दस मुहर्रम में होने वाली घटनाएँ

इस दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल हुई, इसी दिन उनकी पैदाइश हुई, इसी दिन जन्नत में दाखिल किए गए। इसी दिन अर्श, कुरसी, आसमान व ज़मीन, सूरज, चाँद, सितारे और जन्नत पैदा हुए। इसी दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा हुए, इसी दिन उन्हें आग से नजात मिली, इसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके साथियों को नजात मिली और फिरऔन और उसके साथियों को ग़रक किया गया। इसी दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन आसमान पर उठा लिए गए। इसी दिन हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को बुलंद मक़ाम (आसमान) पर उठाया गया। इसी दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी। इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट से नजात मिली। इसी दिन हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अज़ीम सल्तनत अता हुई। इसी दिन हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की आँखों की रोशनी वापस आई। इसी दिन हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की तकलीफ़ दूर हुई। इसी दिन ज़मीन पर पहली बारिश हुई। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब सफ़ा 699)

10 मुहर्रम के दिन के आमाल

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो शख्स आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरेगा तो अल्लाह तआला उसके लिए हर बाल के बदले जन्नत में एक दर्जा बुलंद फ़रमाएगा। (ग़नियतुत्तालिबीन जिल्द 2, सफ़ा 53)

आशूरा के दिन ग़ुस्ल करने का फज़ीलत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिसने आशूरा (दसवीं मुहर्रम) के दिन ग़ुस्ल किया तो वह मौत के अलावा किसी बीमारी में मुबतला न होगा।
(ग़नियतुत्तालिबीन जिल्द 2, सफ़ा 53)

यौमे आशूरा तौबा का हुक्म

सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया: अपनी क़ौम को हुक्म दो कि 10 मुहर्रम को तौबा करें, और जब आशूरा का दिन आए तो मेरी तरफ रुजू करें, मैं उनकी मग़फ़िरत फ़रमा दूँगा।
(फ़ैज़ुल क़दीर)

यौमे आशूरा आँखों का इलाज

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो शख्स आशूरा के दिन सुरमा लगाए, उसकी आँखें कभी न दुखेंगी। (शुअबुल ईमान जिल्द 3, सफ़ा 367)

आशूरा पर अहल व अयाल पर खर्च करने की बरकत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो शख्स आशूरा के दिन अपने घर वालों पर खाने-पीने में वुसअत करेगा, अल्लाह तआला साल भर उसके रिज़्क में वुसअत अता फ़रमाएगा।

हज़रत सुफ़ियान सवरी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया: हमने इसका तजुर्बा किया, ऐसा ही पाया। (मिश्कात शरीफ़, सफ़ा 170)
हज़रत शैख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह (ग़नियतुत्तालिबीन जिल्द 2, सफ़ा 54) में फरमाते हैं कि हज़रत सुफ़ियान सवरी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि हमने 50 साल तजुर्बा किया, हर बार वुसअत ही पाई। इसी तरह अल्लामा मुनावी रहमतुल्लाह अलैह (फ़ैज़ुल क़दीर जिल्द 6, सफ़ा 236) में लिखते हैं कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: हमने इसका तजुर्बा किया और सही पाया, और हज़रत इब्ने उयैनिया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया हमने 50-60 साल तजुर्बा किया, हर बार वुसअत पाई, इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि 10 मुहर्रम को वुसअत से खाना पकाएं और खिलाएं।

बीमार की अयादत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो कोई आशूरा के दिन मरीज़ की अयादत करेगा, गोया उसने तमाम बनी आदम की अयादत की। (ग़नियतुत्तालिबीन जिल्द 2, सफ़ा 54)

आशूरा के दिन पानी पिलाने का सवाब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिसने आशूरा के दिन लोगों को पानी पिलाया, ऐसा है जैसे उसने अल्लाह की कभी नाफरमानी ही न की हो। (ग़नियतुत्तालिबीन जिल्द 2, सफ़ा 54)

आशूरा के रोज़े

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो शख्स मुहर्रम के पहले जुमा को रोज़ा रखे, अल्लाह तआला उसके पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। और जो शख्स मुहर्रम के तीन दिन - जुमा, शनिवार, इतवार - के रोज़े रखे, उसके लिए 9 साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जो शख्स मुहर्रम के पहले 10 दिन आशूरा तक रोज़े रखे, वह जन्नतुल फ़िरदौस का वारिस बनेगा। (नुज़हतुल मज़ालिस जिल्द 1, सफ़ा 145)